स्वामी राजर्षि मुनिजी

स्वामी राजर्षि मुनिजी का जन्म गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत के सापर गाँव में महावद नवमी को दिनांक 11 फरवरी 1931 को हुआ था। आपका पूर्वाश्रम का नाम यशवंतसिंह जाडेजा था। आप भौतिक शिक्षण में M.A के बाद सरकारी अफसर बने।

आपने स्वामी कृपाल्वानंदजी लिखीत पुस्तक "गुरु प्रसादी, गुरु वचनामृत तथा आसन और मुद्रा" पढ़ने के पश्चात् मन ही मन यह तय कर लिया कि स्वामी कृपाल्वानंद ही मेरे आध्यात्म मार्ग के गुरु है। महावद नवमी दिनांक 19/2/1871 के दिन कृपाल्वानंदजी ने आपको संन्यस्त की दीक्षा दी तथा नया नाम स्वामी राजर्षि मुनि दिया। गुरु से योग दीक्षा, मार्गदर्शन प्राप्त होने के पश्चात् ज्यादातर समय एकांतिक योग साधना करते रहे।

आपको ई. सन् 1993 में शिवावतार भगवान लकुलीशजी ने प्रत्यक्ष दर्शन एवं मार्गदर्शन देकर सनातन संस्कृति पुनरुत्थान कार्य करने का आदेश दिया। आपने सनातन संस्कृति प्रसार हेतु "लाईफ मीशन" (Lakulish international fellowship Enlightenment Mission) नामक संस्था की स्थापना कर गुजरात के सुरेन्द्रनगर ज़िले के जाखण गाँव में मुख्यालय एवं त्रिमूर्ति मंदिर की स्थापना की। ई.सन् 2007 जनवरी में त्रिमूर्ति मंदिर की प्रतिष्ठा के समय शिवावतार भगवान लकुलीशजी ने उनके वर्तमान जीवन में दूसरी बार दर्शन मार्गदर्शन प्रदान किया और कार्य आगे चलता रहे ऐसा आयोजन कर एकांतिक साधना करने का आदेश दिया।

आपने विश्व के योग जिज्ञासुओ को मार्गदर्शन हेतु 2013 में गुजरात के अहमदाबाद में "लकुलीश योग युनिवर्सिटी" की स्थापना की। आप ईश्वरानुग्रह एवं दृढ़ संकल्पबल से दीर्घकाल कठीन योग साधना कर खेचरी मुद्रा और शांभवी मुद्रा सिद्ध महान योगी है और रोग, जरा, मृत्यु रहीत दिव्यदेह की प्राप्ति हेतु कठीन योग साधनारत है।